IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

मुगल सेना के अस्त्र–शस्त्र

डॉ. सुखेन्द्र सिंह
अतिथि विद्वान इतिहास विभाग
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, जिला सतना (म.प्र.)

शोध–सारांशः अस्त्र–शस्त्र उतने ही प्राचीन हैं जितनी कि मानव सभ्यता। इसका जन्म मानव की अपनी सुरक्षा करने की भावना के साथ ही हुआ। समय के साथ–साथ और आवश्यकतानुसार इनका स्वरूप परिवर्तित और विकसित होता रहा है। आजकल मारक और सामूहिक संहार के लिए प्रयुक्त होने वाले अस्त्रों का युग है, जिनके प्रयोग सभ्यता और विश्व के अस्तित्व को ही खतरा उत्पन्न हो गया है। पुरातन काल में भी अनेक ऐसे ही मारक शस्त्रास्त्रों का वर्णन आता है जिनका उपयोग दिव्य शक्ति के रूप में किया जाता था। इस शोध पत्र में उक्त बिन्दुओं को शामिल किया गया है।

मुख्य शब्दः मुगल सेना, अस्त्र–शस्त्र, भारत, अथियार, युद्ध–साधन, सुरक्षात्मक, आक्रामक आदि।

प्रस्तावनाः

भारत में मुगल काल के समय युद्ध में प्रयोग किए जाने वाले हथियारों में से अनेक ऐसे हैं, जिन्हें समान रूप से राजपूतों और मराठों के साथ–साथ सिखों ने भी उपयोग किया है। इसलिए बहुतेरे शस्त्रास्त्रों को लेकर यह कहा जाना तो बहुत कठिन है कि इन्हें मुगल अपने भारत आगमन के साथ लेकर आए या कि वे पहले से ही भारत में उपयोग होते रहे थे। फिर भी ऐसे कुछ हथियार और युद्ध–साधन अवश्य ही हैं, जिन्हें लेकर निश्चित रूप से माना जा सकता है कि उन्हें मुगल अपने साथ ही लाए। विशेषकर अलग तरह के कवच, शिरस्त्राण और छुरे–बरछियां। इसके साथ–साथ उन हथियारों की भी मुगलकाल में चर्चा करना आवश्यक है, जिन पर मुगल कला या मुगलों की व्यवाहर पद्धति छाप देखी जाती है।

मुगलकाल की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि आक्रामक और सुरक्षात्मक दोनों ही किस्म के नए–नए हथियारों का आविष्कार इन दिनों हुआ। यही नहीं पहली बार भारतीय इतिहास में तोपों और अधिक विध्वंसक हथियारों का जबरदस्त उपयोग देखा गया। इस युग की सबसे बड़ी उपलब्धि यह भी कही जा सकती है कि इस समय में उपयोग आए अनेकानेक अस्त्र–शस्त्र न केवल मुगलकालीन लेखकों ने अपने ग्रंथों में विस्तार से बयान किए, बल्कि उन्हें लेकर काफी कुछ विश्लेषण भी किया। मुगलों के अधिकतर हथियार सुरक्षित रूप में अब तक ज्यों–के–त्यों मौजूद भी है। उन्हें भारत के विभिन्न संग्रहालयों में देखा जा सकता है। इन हथियारों के कारण न सिर्फ उस समय की युद्ध कला पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा है, अपितु यह भी पता चलता है कि तत्कालीन योद्धा व्यक्ति रूप में कितने शक्तिशाली थे और उनकी शारीरिक क्षमताएं किस सीमा तक पहुंची हुई थी। अनेक हथियार ऐसे मिले हैं, जिन्हें धारण करने वाला योद्धा आज के आदमी की लंबाई की तूलना में कहीं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

अधिक लंबा, चौड़ा और शक्तिशाली हुआ था। उदाहरण के लिए 2 से 3 फुट लंबाई तक के छुरों को लिया जा सकता है। इससे सहज ही यह कल्पना की जा सकती है कि इनसे प्रहार करने वाला हाथ कितना लंबा और शक्तिशाली होता होगा।

मुगलकालीन शास्त्रास्त्रों का एक और वैशिष्ट्य है उनका कलात्मक रूप और साज–सज्जा। इस युग तक मनुष्य की सुरुचि संपन्नता कहां तक पहुंची हुई थी, यह अनुमान भी सहज ही हो जाता है। इस समय के अनेक शस्त्रों पर सोने का काम है। उनकी मूठें कीमती रत्नों से जड़ी हुई है। बहुतेरे शस्त्रों की मूठें चांदी वाली भी हैं। सोने के पानी का काम भी खूब प्रचलित हो चुका था। तलवारों, भालों और बरछियों आदि से लेकर तोपों में भी बेहतरीन किस्म का और अपनी आक्रामक क्षमता के लिए आवश्यक गरमी सहने की मजबूती वाला लोहा उपयोग किया गया है। तलवारों की म्यानें अच्छी किस्म की लकड़ी की बढ़िया कारीगरी से बनी हुई है। अनेक पर मखमली और सोने के तारों तथा जरी आदि का काम भी किया गया है। इन पर किया गया काम मुगलकाल में बढ़ी वैज्ञानिक और कलात्मक सूझबुझका भी प्रमाण है। बहुत–सी तलवारों, कटारों, शिरस्त्राणों आदि पर बेहतरीन किस्त की पच्चीकारी की गई है। धातुओं का जोड़–तोड़ भी यह जाहिर करता है कि उस समय के लोग असे तराशने, जोड़ने, मोड़ने और संवारने के सभी साधन ढूंढ़ चुके थे, तथा वे आज की मशीन की तुलना में कहीं अधिक कलात्मक और पारंगत हो चुके थे।

आक्रामक हथियारों की तुलना में मुगलों ने बाद के युद्ध–हथियारों को कहीं अधिक सुरुचि और योग्यता के साथ बनाया था। उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले विविध किस्म के बख्तर या कवच इतने बढ़िया थे कि उनकी तुलना में तत्कालीन अन्य कवच उतने बेहतरीन नहीं थे। राजपूतों की तरह पच्चीकारी और कलात्मकता उनमें भे ही उतनी न रही हो, किंतु उनके जोड़ और योद्धा को बचाने के अनेक हिस्से बड़ी बारीकी से बनाए गए थे। मुगलकाल से पूर्व भारत में ढालों और शिरस्त्राणों का कब, कहां तक और किस तरह से प्रारंभ हुआ था, यह ठीक तरह पता नहीं चलता, पर इस दौर में जितनी तरह की ढालों, शिरस्त्राणों और कवचों को पाया गया है, वे अनेकानेक है। योद्धा अपनी सैनिक स्थिति, पद और हैसियत के अनुसार हथियार रखा करता था। प्राप्त हथियारों की किस्में सजावट और उनमें उपयोग की गई साधारण धातु या साने–चांदी, रत्नों के काम से यह जाहिर हो जाता है।

ईसवी पूर्व और बाद के समय की ही तरह मुगल काल में सैनिकों के लिए बांह–कवच पहनने का रिवाज था। ऐसी तलवारें इस समय में पहली बार समने आई, जिनमें मूठ के साथ–साथ बड़ी सफाई से बांह–कवच भी लगा रहता था। इस एक तरह के धातू दस्ताने से योद्धा को युद्ध के समय शत्रु का वार कलाई पर सहने में सुविधा होती थी। आइने अकबरी में अनेक मुगल कालीन हथियारों के रंगीन चित्र दिए गए है। इन रंगीन चित्रों से तत्कालीन हथियारों के सारे रूप–रंग पर काफी कुछ रोशनी पड़ती है। इनमें फरसे, कटारें, बरछी, तलवारों की किस्में, ढाले, गदा आदि दर्शाय गए है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

मुगल काल में ऐसी मूंठो वाले हथियारों भी बहुतायत से पाए जाते हैं, जिनका निर्माण हाथी दांत से होता था। हाथी दांत की कई मूठों पर पच्चीकारी भी की हुई है अनेक को रगों से भी सजाया गया है। इस समय का एक सबसे विचित्र और खतरनाक हथियार फ्लैल था। अनुमान किया जाता है कि फ्लैल का निर्माण इसी युग में हुआ। एक शानदार और बढ़िया बेंट पर, जिसमें एक सिरे पर, योद्धा के पकड़ने के लिए मूठ की जगह एक गोलाकार बना हुआ है, दूसरे किनारे पर मुड़े हिस्से में एक मोटी जंजीर लगी होती थी। इस जंजीर में एक बड़ा षटमुखी भारी लटकता रहता था। इसे योद्धा गदा की तरह घमाता था। यह हथियार सामने आने वाले अनेक लोगों को मटियामेट कर सकता था। फ्लैफ के अतिरिक्त कम बेंट वाले एक ऐसे छोटे फरसे की भी चर्चा आइने अकबरी में आई है, जिसे गरदनी कहते थे। सामने वाले की गरदन में इसे डालकर उसे समाप्त किया जा सकता था। गरदनी के मुंह पर फरसे की तरह एक नुकीली कटार लगी रहती थी। इसका अगला हिस्सा तलवार की ही तरह गरदन काट सकती थी।

इस काल के अनेक हथियारों और उनकी म्यानों पर जो काम किया गया है, वह भी कम उल्लेखनीय नहीं है। कई म्यानें (कटार और तलवार दोनों ही) ऐसी मिलह है, जिन पर मखमल के साथ–साथ सोने–चांदी की बेहतरीन कारीगरी मौजूद है। इसमें कशीदाकारी के भी नमूने देखे जा सकते है। मूठों में तांबे, पीतल, आदि धातुओं का भी खूबी के साथ उपयोग होता था। हाथी दांत पर इस काल में मुगल और भारतीय दोनों ही कलाओं का बारीक काम पाया गया है। बारूद रखने के लिए बनने वाले तुरही के आकार जैसे एक पात्र पर भी हाथी दांत का और कई किस्त का जड़ाऊ काम देखा गया है। अस बीच चमड़े और हथियार के बीच एक बेहतरीन तालमेल स्थापित किया गया है। योद्धाओं, उनके वाहनों और उनके हौदों पर इस तरह के बैल्ट लगाए जाते थे, जिनमें खास तरह का हथियार, खास तरह से फिट हो सके। ढालें, म्यानें आदि भी चमड़े के काम वाली बनाई जाती थी। उन्हें लटकाने के लिए भी चमडत्रे के बैल्ट बनने किस्में उपयोग होती थीं। भैसों, हिरनों, बारहसिंघों और शेरों की खालों के अलावा ऐसे चमड़े की चीजें भी मिली हैं, जिनसे सुरक्षात्मक हथियार ही बना लिए जाते थे। उदाहरण के लिए मुगल काल में उन ढालों की भी बहूतायत से चर्चा, निर्माण और प्रमाण पाया गया है, जो गेंडे की खाल के अलाबा कछुए और मगर की खाल से तैयार होती थी।

सामाजिक, राजनीतिक पद–मर्यादा क अनुसार आदमी हथियार और हथियार की सज्जा के साथ उसे धारण किया करते थे। राजपूतों की तरह मुगलों में भी हथियारों, यथा कटारों, छुरों, तलवार–मूठों, तरकशों, तीरों के ऊपरी भागों आदि को जवाहररतों से सजाया–बनवाया जाता था। अनेक हथियारों की मुठों पर बहुमूल्य हीरे भी जड़े मिले हैं। ऐसे कई हथियार 17वीं शताब्दी के बनें हुए है।

फरसे, अंकुश

हर हथियार की तरह इनकी भी सजावट होती थी। अंकुश हाथीदांत की कारीगरी के भी होते थे। युं तो फरसों और भालों, बरछों की सैकड़ों अस समय में थीं, किंतु कई अपनी कलात्मकता और गुणवत्ता–दोनों

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

दृष्टियों से बहुत प्रसिद्ध हैं। यहां कुछ का ब्यौरा दिया जा रहा है –

तरंग लैह : औसत से 4 फुट के इस फरसे में अर्द्धचंद्राकार फल होता था। इस फल के पिछले हिस्से में चित्रकारी और खुदाई का काम भी हुआ था। इस फल के पिछले हिस्से में चित्रकारी और खुदाई का काम भी हुआ करता था। यह शत्रु पक्ष मे घुसने के बाद अपने फल की ओर से तीन–तरफा मार करता था। धार इतनी तेज होती थी कि यह शत्रू के शरीर में जिस और लगता, मक्खन पर पड़ी किसी चीज की तरह भीतर सरकता चला जाता था।

जगनोल : चौड़े फल वाला बड़ा फरसा। यह बहुतायत में उपयोग किया जाता था। इसका फल भी तीन ओर मुड़ होता था। यह भी तिहरी मार कर सकता था।

सादा : शब्दार्थ की ही तरह सादा किस्म का लोहे का फरसा। फल गोलाई लिए हुए, चंद्राकार मुद्रा में होता था। सामान्यतः यह बांस या लाठी में जड़ा रहता था। बहुत ज्यादा कलात्मकता नहीं होती थी और सस्मे दामों में सहज उपलब्ध था। सेना के सैलिक या जंगलों में रहने वाले लोग इसे धारण करमे थे। लोहे का भी लाठी की जगह उपयोग मिलता है, पर तुलना में बहुत कम।

मुगल सेना में आक्रमण और बचाव इन दोनों के लिए हथियार थे। मुगलकालीन सैनिक तरह–तरह के आक्रामक एवं रक्षात्मक हथियारों का प्रयोग करते थे। इन हथियारों की ठीक–पहचान कठिन है। हथियारों और बख्तरों (कवचों) को आमतौर पर सिलाह (बहुवचन असलाह) कहा जाता था। सभी किस्म के हथियारों और बख्तरों को अत्यधिक महत्व पूर्ण माना जाता था और उनको अलंकृत करने में बड़ी रुचि तथा सूझ–बूझ दिखाई जाती थी। कवच दो किस्मों के होते थे, पीठ, छाती और बाहुओं की हिफाजत के लिए फौलदी तोपों और पट्टिकाओं का और कमीज की तरह पहनी जानी वाली फौलादी जाली का जिसके साथ सिर, गर्दन और चेहरे को बचाने के लिए उसी धातु का जालीदार या टोप होता था। इस जाली की कमीज के नीचे तलवार के वार प्रतिरोध करने योग्य कपड़े की एक मोटी फतुही पहनी जाती थी। तोपों के शिखर पर तारे या अन्य कोई चीज लगी होती थी जिनमें कलगी लगाने के लिए एक कोश रहता था। जो घुड़सवार कवच खरीद सकते थे वे इसका प्रयोग अवश्य करते थे।[i]

मुगल सैनिक भारत के अतिरिक्त तुर्की, मध्य एशिया तथा ईरान में प्रयोग किए जाने वाले हथियारों का प्रयोग करते थे। तरह–तरह की तलवारें, शमशीर, सिरोही, खड्ग पट्टा इत्यादि का प्रयोग होता था। ढाल लोहे या मोटे चमड़े (भैंस, हाथी, खाल या गेडें) की बनती थी। तरह–तरह की कुल्हाड़ियाँ तथा भाले प्रयोग में करते थे।[ii] तीर और धनुष का भी प्रयोग किया जाता था। बंदूकों के प्रयोग में आने के पश्चात् कुछ सैनिक बंदूक तथा पिस्तौल भी रखते थे। जंजीर या लोहे की बनी जिरिह या अंग रखा (कोट की तरह) तथा सिर पर पहनने की टोपी का भी प्रयोग किया जाता था।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

मुगल अश्वारोही सैनिक अपने पास तलवार ढाल, भाला, खंजर या कटार, कुल्हाड़ी और धनुषबाण रखते थे, बाद में वे पिस्तौल या बड़ा तमंचा भी रखने लगे थे तलवार कई प्रकार की होती थी; झुकी हुई टेढ़ी तलवार को शमशेर कहते थे, कुछ कम टेढ़ी तलवार को सिरोही कहते थे, चौड़ी और सीधी तलवार को खांडा कहते थे ढाल या तो फौलाद की या सांभर, भैंसे या हाथी के मोटे चमड़े की बनी होती थी। श्रेष्ठ उच्च श्रेणी का योद्ध ''गुर्ज'' (गदा) भी रखता था।[iii] भाला भी था। यह लम्बे बाँस का होता था जिसके एक सिरे पर फौलाद का नुकीला भाग रहता था। युद्ध की कुल्हाड़ियाँ भी कई प्रकार की होती थी– एक धार वाली, दो धार वाली, तिकोनी धारवाली, चौड़ी धारवाली जिसका एक सिरा नुकीला होता था।[iv]

घुड़सवार दल के पास भी हमला करने और बचाव करने के लिए बढ़िया किस्मों के हथियार होते थे। जिन हथियारों पर सबसे अधिक भरोसा किया जा सकताथा, वे कोता मारक या छोटी मार के हथियार (अर्थात् वे हथियार जो आमने–सामने की लड़ाइयों में काम में लाये जाते थें) कहलाते थें। ये छोटी मार के हथियार पाँच किस्म के थे : 1. ढाल और तलवार 2. गदा 3. भाले और 4. छुरे। अधिक लम्बी मार के लिये तीर–कमान, तोड़दार बन्दुके (Matenlocks) और पिस्तौल प्रयोग लायी जाती थी। अग्निबाणों का भी प्रयोग होता था, परन्तु उनका संबंध तोपखाने में रहता था।

धनुष लगभग चार फीट लम्बा होता था और यह पशुओं के सींग, लकड़ी, बांस और लोहे से बनाया जाता था। धनुष की प्रत्यंजा सफेद रेशम के मोटे और मजबूत धागे से बनायी जाती थी। कई प्रकार के धनुष और विभिन्न प्रकार के बाण उपयोग में लाये जाते थे। निरीक्षण और प्रमाणीकरण के अवसर पर सैनिक अपने सभी हथियार पेश करते थे।[v]

तीर कमान को अत्यधिक उपयोगी और प्रभावशाली हथियार समझा जाता था लगभग सारा घुड़सवार दल इसे अपने साथ लेकर चलता था। और सब मुगल घुड़सवार अपने धनुष–कौशल के लिए प्रसिद्ध थे।[vi] तोड़दार बन्दूकें जो काफी भारी और सम्भवतः कम असरदार हथियार थी पैदल सेना द्वारा काम में लायी जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि पिस्तौल का प्रयोग बहुत ही कम होता था। तोड़दार बन्दूक और तीर–कमान की तुलना करते हुए बर्नियर ने लिखा है जितनी देर से कोई बन्दूकची दो बार गोली चला सकता है उससे भी कम समय में एक घुड़सवार छः बार मार सकता था।

युद्ध क्षेत्र में अश्वों की सुरक्षा के लिए उनके वक्ष स्थल और कपाल पर लोहे की चद्दर लगायी जाती थी। अश्वारोहीं भी सुरक्षा के लिये कवच दो प्रकार के होते थे– प्रथम सिर को ढकने के लिये लोहे की चादर से बना हुआ टोपेनुमा भाग, भुजाओं वक्षस्थल और पीठ की सुरक्षा के लिये ढ़कने हेतु फौलाद की चद्दरें ये सभी परस्पर जुड़ी रहती थी और अलग भी हो सकती थीं द्वितीय, लोहे के मोटे तारों से गूंथा हुआ कमीज और मस्तक, गर्दन और मुँह की सुरक्षा के लिये लोहे के तारों के बने हुए जालीदार भाग। कवच की नीचे रुई भरे मोटे कपड़े पहिने जाते थे जिससे कि तलवार का आघात शरीर पर नहीं लगे।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

मुगल सैनिक के कुछ धनुष इतने प्रभावी होते थे कि इनके तीर हाथी की चमड़ी के भीतर भी घुस सकते थे। धनुर्विधा के अभ्यास के लिए मुगल सैनिक अपने सामने एक विशेष लक्ष्य या निशाना रखते थे। यह निशाना अधिकारी के खेमें के पास बना मिट्टी का एक टीला होता था। जिस पर वह और उसके सिपाही प्रतिदिन कुछ तीर छोड़ते थे। उनमें से कुछ तीर–हाज इतने निपुण हो जाते थे कि वे साठ या सत्तर गज पर रखी चाय के प्याली के आकार की वस्तु का भी निशाना मुश्किल से ही चुकते थे।

जैसा कि सैन्य प्रबन्ध का अध्ययन करने से पता चलता है कि तोड़दार बन्दूक को एक घटिया किस्म का हथियार समझा जाता था। इसका प्रयोग पैदल सेना करती थी। इस बन्दूक में काफी सुधार करने का श्रेय अकबर को दिया जाता है। अकबर की तोड़दार बन्दूक की नालियाँ दो लम्बाइयों की होती थी– 66 इंच और 41 इंच। इन्हें इस्पात की बेलनाकार गोल पत्तियों से बनाया जाता था और इनके दोनों सिरों को आपस में ढलाई करके जोड़ दिया जाता था।

अस्त्र–शस्त्रों में तरह–तरह की तलवारें खड्ग इत्यादि का प्रयोग राजस्थान के मनसबदारों में बहुतायत से होता था। ढाल लोहे या मोटे चमड़े (भैंस, हाथी खाली या गेड़ा) की बनती थी। तरह–तरह की कुल्हाड़ियाँ तथा भाले भी प्रयोग करते थें। तीर और धनुष का प्रयोग किया जाता था। कछवाहा सिलहाना में भिन्न–भिन्न प्रकार के निम्न हथियार मुगल सैनिकों के पास पाये जाते थे। तोला, नुपुरा, तेगा, गुरजी, फरसी, (तलवार) गुप्ता, धुप साकल, कटारी, खंजर, मूठी, वाफी, कमाण धनुष, तीर, फुलकवार, सीली, दस्ताखुरी, जागमी, सीसती तोहनाल, हथनाल, नरनाल, शुतरनाल, कुलठाल, फावड़ा, कुदाल लेजम, फतुही, तरही, बैणल, सुधाण, घड़ावली कलगी, इसलाना, सासर, घर, घड़ावणी, बादरी, दंगला, गिलोल, छड़, सीटी, चक्र, दकालगिरी, नीपती आदि विभिन्न प्रकार के अस्त्र–शस्त्र थे।

उपरोक्त सभी हथियार को ढालने के राजस्थान के मनसबदारों को अपने ही कारखाने थे जहाँ निरंतर शस्त्रों का निर्माण कार्य चलता था। इसके अतिरिक्त हथियारों का आयात भी किया जाता था। जैसे जोधपुर की मानशाही प्रसिद्ध थी। इसी प्रकार बीजापुरी, बुरीनपुरी, औरंगशाही, जयपुर के मानगढ़ी और रामशाही प्रसिद्ध तलवारें थी। नामोर के तीर और भाले प्रसिद्ध थे। जोधपुर और जयपुर की तलवार अच्छी मानी जाती थी। मुगलकाल में तलवार, गदा, छुरी व कटार, भाला तथा बरछा (बल्लम) इत्यादि अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग आक्रमण हेतु किया जाता था। यद्यपि तोपखाने का अविष्कार हो चुका था किन्तु फिर भी सम्पूर्ण मुगलकाल में अस्त्रों का प्रयोग होता रहा।

आक्रामक शस्त्र जो मुगलसेना में प्रयुक्त होते थे निम्नांकित है–

1. तलवार[vii] – प्राचीनकाल से ही तलवार एक प्रमुख शस्त्र के रूप में प्रयोग की जा रही थी। इसे अरबी में 'सैफ', फारसी में शमशेर तथा हिन्दी में तलवार कहा जाता है। प्रत्येक तलवार का आकार अलग–अलग होता था। फारसी तलवारें सामान्य तलवारों से अधिक घुमावदार होती थी जबकि तुर्की तलवारें अन्त में अधिक चौड़ी होती थीं। यूं तो मुगलों और उनके समकालीनों– (मराठों, राजपूतों, सिखों) में समान रूप से तलवारों की

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

बहुतविधि किस्में मौजूद थीं, किंतु मुगल काल की एक–मात्र देन थी–ईरानी तलवार। इस नाम को ेकर निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि ईरानी तलवार मुगलों के साथ ही आई। इसका रूप प्रकार निश्चित रूप से राजपूतों, मराठों और सिखों की तुलना में अलग है।

इन दिनों की तलवारों में एक वैशिष्ट्य यह भी पाया गया है कि ये तलवारें सिर्फ लोहे से नहीं, लोहे के साथ अन्य धातु के सम्मिश्रण से बनती थीं। फल इस कदर लोचदार होता था कि प्रहार केसमय वह नागिन की तरह लोच लेती और फनफनाती हुई लगती थी। जब यह फल हवा को काटता था तो एक तेज सरसराहट हाती थी और इस सरसराहट की गति से तलवार की आक्रामक शक्ति का भी अनुमान किया जा सकता है।

तलवारों की मूठें भी विविध किस्म की बनती थीं। अधिकतर मूठें पूरे चांद के आकार वाली होती थीं। यह आकार विभिन्न कलात्मक डिजाइनों से सजाया जाता था और डिजाइनों के आधार पर बहुत हद तक योद्धा की सामाजिक आर्थिक और आर्थिक और राजनीतिक हैसियत, शक्ति पहचानी जा सकती थी। इन आकारों में फुलैरा, बताशा, कई रूप, कई नाम भी मिलते हैं। मूठों की सजावट में जानकवरों और पक्षियों के चेहरे भी पाए गए हैं। दस्तानेदार तलवार में मूठ और उसके साथ ही एक ऐसा पोलदार हिस्सा भी बना रहता था, जो कलाई को ढक ले। इस पोलदार हिस्से के ीतर बेहतरीन और मुलायम मखमल या रुई का उपयोग होना भी सुना गया है। बतलाया जाता है कि इस रुई या मखमल से कलाई के घुमाव में सुविधा होती थी और किसी किस्म से दस्ताना कलाई को नुकसान भी नहीं पहुंचा सकता था। तलवारों की मूठों के विभिन्न हिस्सों के विभिन्न नाम हुआ करते थे।

हर मुगल बादशाह के समय हथियारों को लेकर नए–नए आविष्कार और खोजों का सिलसिला चलता रहता था। बहुत कम लोग जानते हैं कि बाबर के बाद से अकबर, हुमायूं आदि विभिन्न मुगल बादशाहों के समय में तलवारों की मूठों, आकार–प्रकार, फल की आक्रामक शक्तियों को बढ़ाया जाता रहा। इस दौर में तलवारों के नए–नए रूप–चेहरे और उसकी आक्रमक शक्ति की विशिष्टता या गति में अंतर आ गया था। उसी के अनुसार उन तलवारों के नामकरण भी होते रहे। यही कारण है कि तलवारों में निम्न प्रकार के नाम पाए जाते हैं। तलवारे अकबरी, शाहजहांनी, हकीमखानी, औरंगजेबी आदि। तलवारों के विशिष्ट नाम रूप इस प्रकार हैं:

मोतिया– इस विचित्र किस्म की तलवार में अनेक विशिष्टताएं थीं। निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि इस नाम की तलवार की निर्माण मुगलों के समय में ही हुआ। किंतु मोतिया तलवार का निर्माण मुगलों के समय में ही हुआ। किंतु मोतिया तलवार अजब विशिष्टताएं लिए हुए थी। इसके फल पर छेद हुआ करते थे। इन छेदों में ऐसी छोटी–छोटी घममने वाली गोलियां लगी रही थीं, जो टेबल पर रखे ग्लोब की तरह हल्के–से छूने भर से घूम सकती थीं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

तलवार अकबरी– यह बहुत वैशिष्ट्य लिए नहीं है, किंतु फल इस कदर लोचदार और पतला था कि एक साथ शोविंग ब्लेड की तरह सरसराहट के साथ साने वाली चीज को काट सकता था। इसका कोई भी कोना, किनारा घाव दे सकता था।

सकेला– इस किस्म की तलवारें आकबरी से मिलती–जुलती हैं। तलवारे अकबरी और सकेला में फर्क मूठ का ही है। सकेला में सस्ते किस्म की कम सजावट वाली मूठ मिलती है, जबकि तलवारे अकबरी में कई–कई किस्म की मूल्यवान मूठ पाई गई है।। संभवतः सकेला का उपयोग सामान्यतः सैनिक करते रहे होंगे, जबकि तलवारे अकबरी को बड़े लोग धारण करते होंगे।

शमशीर–इसका सीधी–सीधा अर्थ भी तलवार ही है। इसके साथ किसी किस्म का वैशिष्ट्य या विशेष नाम नहीं जुड़ा है। शमशीर एक ही तरह की, एक आकार–प्रकार वाली होती थी। वैसे यह नाम किसी भी तलवार के लिए प्रयुक्त किया जा सकता था। जहां तक शमशीर के प्रचलित नाम–आकार की बात है, केवल यही कहा जा सकता है कि इसकी मूठें कई तरह की थीं। फल मुड़ा हुआ होता था। नोक की ओर का एक निश्चित हिस्सा दोहरी धार वाला होता था।

ताजशाही –तहरी धारदार तलवार थी।

सुलतानशाही–दोहरी धारदार और नोक वाले हिस्से की ओर लंबी तलवार थी।

अलेमानी–इकहरी धारदार तलवार।

तेगा–चौड़े मोहाने वाली होती थी।

जुल्फकार–आरे जैसी दांतेदार नोक वाली दुधारी तलवार।

अनेक ऐसी तलवारें भ हैं, जिनमें मूठ और फल के बीच से या मूठ से चमड़े का बेल्टनुमा हिस्सा लगा रहता था, ताकि चलाते समय योद्धा की कलाई में वह तलवार को उलझाए भी रख सके।

छुरों और कटारों की जितनी विविध किस्में इन तीनों ही काल में मिलती हैं संभवतः किसी समय में नहीं रही होंगी। तलवारों की तरह ही इन पर भी सजावट होती थी। सामान्यतः छुरे और कटार एसे नाम हैं, जिनके तहत सभी किस्में आ जाती हैं, पर बहुत कम लोग जानते हैं कि हर किस्म का एक निश्चित नाम प्रकार, रूप और उसकी प्रहार – विशेषता हुआ करती थी। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के अतिरिक्त राजस्थान के कुछ सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में कटार रखे हुए दूल्हों को देखा जा सकता है। इनमें ज्यादातर जामाघर का उपयोग करते हैं। जामाघर भी विभिन्न किस्मों की कटारें थीं। विवाह के अवसर पर दूल्हे के लिए जिन अनिवार्य चीजों का होना बतलाया जाता था, उनमें जामाघर की इकहरी धारवाली किस्म मिलती है।

अनेक इतिहासकारों ने खंजर, कटार या छुरों को लेकर ईजाद का सारा श्रेय ईरान और अन्य अरब देशों को दे दिया है, पर बहुतेरे प्रमाण ऐसे भी हैं, जिनसे पता चलता है कि, किसी–न–किसी रूप में इसका अस्तित्व भारत में मुगल काल से पहले, यहां तक कि प्रागैतिहासिक काल में भी था। आदिम मानव जाति के भारत में अस्तित्व को लेकर जो बहुत सी चीजें मिली हैं, उनमें नुकीले, तराशे हुए लंबे ऐसे पत्थरों का जिक्र

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

आया है, जो अपनी लंबी दरांती से किसी भी चीज को काटने के उपयोग में लाए जाते थे। यही नहीं, समुद्रगुप्त के समय में भी कुछ ऐसी छोटी तलवारों का जिक्र है, जो किसी–न–किसी रूप में खंजर न सही, कटार जैसी लगती हैं। ये भी दोधारी ही होती थीं और इन पर मूठ की जगह कटारी की तरह विशिष्ट आकार प्रकार की पकड़ने वाली जगह न बनाकर तलवार जैसी मूठ लगी होती थी। उक्त मुगल कालीन समय की मुख्य अस्त्र–शस्त्र रहे हैं। जो युद्ध में हमेशा करगर रहे हैं।

संदर्भ स्रोत

[i] भारतीय युद्ध कला, एस.डी. चौपड़ा पृ. 5
[ii] हरिशंकर श्रीवास्तव मुगल प्रणाली पृ. 205
[iii] बी एन लूणिया, मुगल शासन व्यवस्था, पृ. 143
[iv] भारतीय युद्ध कला, एस.डी. चौपड़ा पृ. 5–6
[v] बी एन लूणिया, मुगल शासन व्यवस्था, पृ. 143
[vi] भारतीय युद्ध कला, सिंह टण्डन, अग्रवाल, पृ. 162
[vii] विलयम इर्विन द अर्मी ऑफ द इण्डियन मुगल्स, पृ. 74